नाम – विनोद कुमार
मो0नं0 – 9415049684

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका

सन 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा वैश्विक उत्थान के परिप्रेक्ष्य में तथा मानवीय संपदाओं को केन्द्रित करते हुए 17 लक्ष्यों तथा 169 संकेतक को प्रकाशित किया गया।

बर्टलैंड समिति जो कि संयुक्त राष्ट्र संघ जुड़ा समित है उसके अनुसार सतत विकास की अवधारणा प्रस्तुत की गई जिसके अनुसार सतत विकास और विकास है जिसमें भावी पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए कि उसके जीवन के मूल्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव ना पड़े वर्तमान जीवन में सारी आवश्यकताओं को पूरा करना है।

सतत विकास में जैसा विदित है कि 17 लक्ष्य घोषित किए गए हैं जिसमें गरीबी भुखमरी पोषण शिक्षा लैंगिक समानता जल आवास पर्यावरण अनुकूलन जिसमें जल में जीवन पृथ्वी पर जीवन रोजगार उद्यम आदि सम्मिलित है।

इन 17 सतत विकास लक्ष्यों को पूर्ति करने के लिए 2015 से 2030 तक का काल निर्धारित है।

सतत विकास के लक्ष्य में जितने लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं वह सभी एक दूसरे पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष एक–दूसरे के परिणाम तथा गुणवत्ता को प्रभावित करेंगे। यदि इनमें से किसी एक पर क्रियान्वयन का सकारात्मक परिवर्तन यही देखने को मिला या नहीं हुआ तो निश्चित ही इस विश्व की कल्पना संयुक्त राष्ट्र संघ ने की है वह कल्पना मात्र बनकर रह जाएगा।

जैसा हम जानते हैं कि मत्स्य पुराण में एक वृक्ष सौ पुत्र के बराबर बताया गया है कहीं ना कहीं धर्मशास्त्र भी सतत विकास लक्ष्यों की पूर्ति में पहले से निष्क्रिय साबित रहा है। ऐसे ही अर्थ वेद में बताया गया है कि हम मनुष्य धरती से उतना ही संसाधन प्राप्त करेंगे तथा हानि नहीं पहुंचाएंगे।

विदित है कि एक पंक्ति जिसे हम सदियों से सुनते तथा अनुभव करते आ रहे हैं कि जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है इस पंक्ति से ही आशय यह है कि युवा शक्ति समाज की असीम शक्ति है जो जिधर रुकमणी उधर सफलता प्राप्त की जा सकती है।

इटली के प्रसिद्ध विचारक जैमिनी ने भी कहा है कि यदि किसी भी क्षेत्र अर्थात सामाजिक राजनीतिक यहां तक आर्थिक क्षेत्र में क्रांति लानी हो तो वहां की बागडोर युवाओं के हाथ में दे दो यह बात शत प्रतिशत सत्य साबित होती है क्योंकि बूढ़ी आंखें सपने तो देख सकती हैं कल्पना तो कर सकती हैं लेकिन उसको वारदात क्रियान्वयन करने की शक्ति अगर किसी में है तो वह युवा शक्ति के पास है।

समाज तथा राष्ट्र के निर्माता युवा को माना जाता है क्योंकि यह बिगड़ती स्थिति को सुधारने तथा आगामी तिथि को बेहतर बनाने का कार्य करती है गांधीजी का वक्तव्य है कि जो बातें दूसरों को सिखाते हैं उन पर खुद अमल करें तो यह दुनिया स्वर्ग बन जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ के लक्ष्यों में निहित लक्ष्य को सुचारू रूप देने का कार्य युवा शक्ति ही कर सकती है।

विश्व में 1.9 अरब युवा है जो विश्व की जनसंख्या के लगभग 16ः है और यह युवा शक्ति और उत्साह से परिपूर्ण होते हैं तभी यह कथन कहा जाता है कि जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है अब अगर हम राष्ट्र भारत की बात करें तो यहां का प्रशासन अधिकांश तौर पर युवाओं के हाथ में है चाहे वह प्रशासनिक सेवा पुलिस सेवा वन सेवा आदि हो।

भारत सरकार द्वारा चलाए गए सार्वजनिक उपक्रम जो प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वन संरक्षण के क्षेत्र में चिकित्सा के क्षेत्र में युवा कार्यरत होकर सतत विकास लक्ष्यों के महत्वपूर्ण बिंदु जैसे स्वास्थ्य शिक्षा जलवायु लैंगिक समानता पर कार्य कर के सतत विकास लक्ष्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा चल रहे हैं।

इसी प्रकार से निजी सहकारिता अथवा निजी उपक्रम जैसे विभिन्न प्रकार की निजी उपक्रम के जरिए सतत विकास लक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

जैसा की विधित है कि भारत एक ऐसा राष्ट्र बन चुका है जिसे युवाओं का देश कहा जाता है जहां के युवाओं के हाथ में शासन सत्ता की बागडोर है। गौरतलब है कि विश्व की निगाहें भारत राष्ट्र पर टिकी हुई है जिसका एक कारण यहां की युवा शक्ति है।

यदि हम विश्व के परिदृश्य को ध्यान में रखकर बात करें तो यह राष्ट्र तथा सारी पृथ्वी को सम्मिलित रूप है। यदि राष्ट्रों का कायाकल्प अच्छा होगा तो निश्चित रूप से विश्व सर्वश्रेष्ठ बनेगा।

सतत विकास के लक्ष्यों के कुछ महत्वपूर्ण बिंदु का आकलन करें तो हम पाते हैं कि कुछ विद्वानों का कथन है कि गरीबी कहीं भी है तो यह बुरा प्रभाव डालेगी इसके लिए युवा स्वरोजगार आत्मनिर्भर हो रहे हैं इससे जल्द ही गरीबी से निजात मिलने की संभावना बनेगी।

अर्थव्यवस्थाओं में क्षेत्र को तीन चरणों में बांटा गया प्राथमिक क्षेत्र तथा द्वितीयक क्षेत्र जो कृषि तथा उत्पादन से धर्म से संबंधित है तथा तृतीय क्षेत्र जो सेवा से संबंधित है युवा पीढ़ी बढ़–चढ़कर भाग ले रहे हैं।

युवाओं को समाज की छिपी आसींद शक्तिमान आ गया है अगर यह ऊर्ध्वगामी रूप में कार्य करें लेकिन ठीक विपरीत यदि यह अधोगामी कार्य करें तो राष्ट्र का विश्व का विनाश कर सकते हैं जिसके लिए युवाओं को विभिन्न प्रयोगिक कलाएं दी जाए।

गौरतलब है कि सतत विकास लक्ष्यों में निहित टॉपिक जैसे जिम्मेदारी अंतरराष्ट्रीय शांति लैंगिक समानता को ध्यान में रखकर जल्द ही भारत सरकार ने अग्निवीर के तहत युवाओं की शक्ति का उपयोग विचारों में करने के लिए शुरू किया है।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार ने सतत विकास लक्ष्यों की पूर्ति के लिए तथा उसमें युवाओं के योगदान के लिए विभिन्न कार्यक्रम जैसे वॅब्।ए ज्त्ैम्डए`ठत्ल्ए` ।त्ळल आदि योजनाएं शुरू की गई जिससे सतत विकास लक्ष्यों में जैसे गरीबी कुपोषण स्वास्थ लैंगिक विषमताओं से निजात पाने के लिए युवाओं को प्रत्यक्ष रूप से शामिल किया जा सके।

भारत सरकार द्वारा कहीं ना कहीं मनाया जाने वाला अमृत महोत्सव अप्रत्यक्ष रूप तथा अप्रत्यक्ष रूप से सतत विकास लक्ष्यों की पूर्ति में सहायता करेगा जिसमें अधिक से अधिक युवा प्रतिभाग कर रहे हैं।

गौरतलब है कि राष्ट्र की रक्षा अंतरराष्ट्रीय शांति जलवायु संसाधन के प्रयोग को सुचारू रूप देने का कार्य युवा शक्ति सैनिक के रूप में शांति को स्थापित करने की बात करी तो कैलाश सलामी आदि सम्मिलित हुए।।